इकाई-2 अपभ्रंश भाषा के महाकाव्य

अपभ्रंश महाकाव्य-परिचय :

जैसे संस्कृत एवम् प्राकृत साहित्य में महाकाव्यों की बड़े पैमाने पर रचना हुई है, इसी प्रकार अपभ्रंश भाषा में भी अनेक पौराणिक महाकाव्यों की संरचना की गई है। उपलब्ध महत्वपूर्ण अपभ्रंश ग्रन्थ इस प्रकार हैं :—

(1) पउम चरिउ (2) रिट्ठणेमि चरिउ (हरिवंश पुराण), (3) तिसट्ठी महापुरिस गुणालंकार (महापुराण) (4) पृथ्वी राज रासो।

उपरोक्त महाकाव्यों का क्रमशः परिचय निम्न प्रकार है :—

(1) पउमचरिउ :

'पउम-चरिउ' के रचयिता महाकवि स्वयंभू हैं जो अपभ्रंश भाषा के ख्याति प्राप्त महाकवि हैं। इनकी रचनाओं में 'पउम-चरिउ' को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। पउम चरिउ में कुल 90 नब्बे संधियाँ हैं जो ~~निम्न~~ पाँच काण्डों में विभाजित हैं :—

(क)	विद्याधर काण्ड —	1 से 20 संधियाँ	= 1 - 20 = 20
(ख)	सुन्दर काण्ड —	कुल 22 संधियाँ	= 21 - 42 = 22
(ग)	सुन्दर काण्ड	कुल 14 संधियाँ	= 43 - 56 = 14
(घ)	युद्ध काण्ड —	कुल 21 संधियाँ	= 57 - 77 = 21
(ङ)	उत्तर काण्ड —	कुल 13 संधियाँ	78 - 90 = 13
		कुल - 90 संधियाँ	

(क) विद्याधर काण्ड : इसमें कुल 20 संधियाँ हैं जिसके भगवान ऋषभदेव के संक्षिप्त परिचयोपरांत वानरवंश और राक्षस - इन दो वंशों का इतिहास प्रस्तुत किया गया है जो आगे चलकर राम की जीवन कथा से सम्बद्ध है।

(ख) सुन्दर काण्ड : इसमें कुल 14 संधियाँ हैं जिनके रामकथा सहयोगी मित्रों, हनुमान के लंकागमन, दौत्य कर्म, लंकादहन, सीता से भेंट आदि अनेक घटनाओं का विस्तृत वर्णन हुआ है।

(ग) युद्ध काण्ड : इसमें 21 संधियाँ हैं जिसमें विभीषण और रावण वार्तालाप, युद्ध टालने हेतु अंगद के पास जाकर प्रयास करना, असफल होने पर युद्ध के लिए नगाड़े बजाना, लक्ष्मण का घायल होना, रावण मन्दोदरी वार्तालाप, सीता को रावण द्वारा प्रलोभन देना, असफल होने पर युद्ध जीतकर सीता को लौटा देने का निर्णय लेना तथा लक्ष्मण के द्वारा युद्ध में मारा जाना आदि अनेक घटनाओं का वर्णन हुआ है।

उत्तरकाण्ड: इसमें कुल 13 संधियाँ हैं जिसमें दीक्षा संस्कार, सीता को राम द्वारा स्वीकार किया जाना, अयोध्यावापस आना, सीता को निर्वासित करना, लवण-अंकुश का जन्म, नारद से प्राप्त जानकारी के आधार पर राम-लक्ष्मण से युद्ध, सीता को पुनः स्वीकार आदि अनेक घटनाएँ वर्णित हैं।

इस प्रकार इसमें जैन परम्परानुमोदित राम कथा का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसमें विविध छंदों, अलंकारों, रसों का प्रयोग किया गया है। इसकी सम्पूर्ण कथा में अहिंसा के सिद्धांत की पूर्ण प्रतिष्ठा की गई है।

(2) रिट्ठणेमि-चरिउ (हरिवंशपुराण)

'अरिष्टनेमि-चरित' हरिवंश-पुराण के नाम से प्रसिद्ध है। इसके रचयिता महाकवि स्वयंभू हैं। ये संस्कृत-प्राकृत भाषा के साथ ही अपभ्रंश भाषा के मर्मज्ञ विद्वान हैं। उनकी कृतियों में 'रिट्ठणेमिचरिउ' या हरिवंशपुराण का विशेष महत्व है।

इस ग्रन्थ में कुल 112 संधियाँ हैं जो निम्न तीन काण्डों में विभाजित हैं:— (क) यादवकाण्ड (ख) कुरुकाण्ड (ग) युद्धकाण्ड। इसके यादवकाण्ड में 13, कुरु में 19 और युद्धकाण्ड में 60 सन्धियाँ हैं। संधियों की यह गणना युद्धकाण्ड के अन्त में अंकित है। इन संधियों में 99 सन्धियाँ स्वयंभू द्वारा लिखित हैं।

'रिट्ठणेमिचरिउ' की रचना धवलइया के आश्रय में की गयी है। इसमें मुख्य रूप से कृष्ण, कौरव और पाण्डव के जन्म, काल आदि सहित युद्ध का वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ में 22वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि का चरित्र-चित्रण किया गया है। इस प्रकार 'रिट्ठणेमिचरिउ' अपभ्रंश भाषा का प्रबन्ध काव्य है। यह महाकाव्य के गुणों से विभूषित होने के कारण प्रबन्ध काव्य के साथ ही महाकाव्य भी है।

3. तिसट्ठी महापुरिस गुणालंकार (महापुराण):

तिसट्ठी महापुरिस गुणालंकार का दूसरा नाम महापुराण है जिसके रचयिता महाकवि पुष्पदंत हैं जो असाधारण प्रतिभावान के साथ ही अत्यंत तेजस्वीवान् महाकवि थे। इनकी समस्त रचनाओं में यह ग्रन्थ महाविशालकाय है। इसके दो खण्ड हैं:— (1) आदिपुराण और (2) उत्तरपुराण। इसके आदिपुराण में 80 संधियाँ हैं जिसमें आदिनाथ एवं भरत का चरित्र-चित्रण किया गया है। उत्तरपुराण में 42 संधियाँ हैं जिसमें शेष अजितनाथ आदि